International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

16वीं लोकसभा के चुनावी जनादेश का विश्लेषण

डॉ. हर्षवीर
राजनीति विज्ञान विभाग
म.नं 45, सैक्टर–1 , रोहतक (हरि0)

शोध–आलेख सार– भारत में बहुदलीय व्यवस्था होने के कारण कई बार विखण्डित जनादेश की समस्या उत्पन्न होती रही है और 1989 के बाद निरन्तर गठबंधन सरकारों का दौर जारी रहा है। इस दौर को भारतीय राजनीति के इतिहास में सर्वाधिक उथल–पुथल का समय माना जाता है। यू.पी.ए. सरकार के शासनकाल में महंगाई व भ्रष्टाचार से त्रस्त जनता से विकास और सुशासन के मुद्दे पर वोट दिया और मोदी लहर के चलते कांग्रेस का जनाधार बिखर गया। 16वीं लोकसभा के चुनावी परिणामों ने कांग्रेस को जो करारी मात दी वह भारतीय राजनीति के इतिहास में नया अध्याय लिखने वाली सिद्ध हुई। इस चुनाव में कांग्रेस मात्र 44 पर सिमट गई और भारतीय जनता पार्टी अकेले 200 सीटें जीतने में सफल रही। प्रस्तुत शोध पत्र में 16वीं लोकसभा चुनाव के सन्दर्भ में चुनावी जनादेश का विश्लेषण किया गया है।

मूलशब्द– चुनावी जनादेश , बहुदलीय व्यवस्था, राजनीतिक दल, मोदी लहर, गठबन्धन की राजनीति, विकास और सुशासन,

भूमिका– वस्तुतः 16वीं लोकसभा के चुनाव से पहले राजनीतिक पण्डितों द्वारा लगाए गए समस्त अनुमान बाद में मिले–जुले परिणाम देने वाले सिद्ध हुए। इस चुनाव में जनता ने जाति, धर्म व क्षेत्र की भावनाओं से उपर उठकर मतदान किया। इस बार भारतीय मतदाताओं की जागरूकता के कारण स्पष्ट जनादेश का आना भारतीय राजनीति की एक महत्वपूर्ण घटना मानी जा सकती है। आजादी के बाद दूसरी बार किसी गैर कांग्रेसी

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

दल ने सरकार बनाई तथा जन वायदों को पूरा करने की दिशा में कदम रखा। इस समय कांग्रेस व उसके सहयोगी दलों की गिनती केवल 59 पर सिमट गई। यद्यपि कुछ राजनीतिक विद्वानों का मानना है कि मजबूत विरोधी दल के अभाव में एक तरह की तानाशाही पैदा होती है। अतः वर्तमान परिदृश्य में भारतीय राजनीति में विरोधी दल की कमी अवश्य महसूस की जा सकती है।

दलीय स्थिति– 16वीं लोकसभा चुनाव के बाद कांग्रेस व उसके सहयोगी दलों को दयनीय स्थिति का सामना करना पड़ा है। जब 16 मई 2014 को चुनावी परिणाम घोषित हुए तो कांग्रेस मात्र 44 पर सिमट गई। इस समय भारतीय जनता पार्टी को 282 सीटें मिली। कांग्रेस गठबंधन को मात्र 59 तथा भारतीय जनता पार्टी गठबंधन को 336 सीटों पर विजय प्राप्त हुई।

यदि क्षेत्रीय दलों की राजनीतिक स्थिति का अवलोकन किया जाये तो स्पष्ट होता है कि तमिलनाडू, आन्ध्रप्रदेश तथा बंगाल में छोड़कर बाकी किसी स्थान पर वे कोई खास कारनाम नहीं कर पाये तथा उनकी राजनीतिक सहभागिता का स्तर काफी कमजोर रहा। इस चुनाव में आम आदमी पार्टी की दलीय स्थिति केवल पंजाब में 4 सीटों पर ही सिमट गई तथा शेष राज्यों में उसकी बुरी तरह से हार हुई। अंततः इस चुनाव में विभिन्न राजनीतिक दलों की स्थिति इस प्रकार रहीः–

तालिकाः 16वीं लोकसभा में दलीय स्थिति

क्रम संख्या	राजनीतिक दलों का नाम	प्राप्त सीटें
1	भारतीय जनता पार्टी	282
2	कांग्रेस	44
3	शिवसेना	18
4	तृणमूल	34

5	अकाली दल	04
6	आम आदमी पार्टी	04
7	अन्नाद्रमुक	37
8	झारखंड मुक्ति मोर्चा	02
9	समाजवादी पार्टी	05
10	जनता दल (यू)	02
11	टी.आर.एस.	11
12	तेलगुदेशम पार्टी	16
13	जनता दल (एस0)	02
14	राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी	04
15	वामदल	02
16	वाई.एस.आर.सी	09
17	निर्दलीय व अन्य	65
	कुल	**543**

(स्रोतः दैनिक भास्कर, 17 मई 2014)

इस तालिका से स्पष्ट हो जाता है कि कांग्रेस की जो करारी हार इस चुनाव में हुई ऐसी 15 लोकसभाओं में कभी नहीं हुई। यही कारण है कि वह अकेली 10 प्रतिशत सीटों तक भी नहीं पहुँच सकी और उसे विपक्षी दल का दर्जा प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। उसे केवल मात्र 44 सीटें प्राप्त हुई तथा भारतीय जनता पार्टी का आंकड़ा अपने सहयोगी दलों सहित 336 पर पहुंच गया। अतः यह स्थिति कांग्रेस के भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं है।

मतदान व्यवहार– चुनाव से पहले प्रत्येक राजनीतिक दल लोगों के बीच में जाता है। चूंकि पार्टी के घोषणा पत्र में चुनावी वायदे दिए होते हैं। आवश्यकता तो केवल इस बात की रहती है कि वह जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्रवाद आदि के मुद्दों को कहाँ तक भूना सकता है। भारतीय जनता को छोड़कर शेष सभी राजनीतिक दलों का खेल परम्परागत मतदान व्यवहार के निर्धारकों पर आधारित रहा। केवल भारतीय जनता पार्टी ने भ्रष्टाचार, मंहगाई, सुशासन एवं विकास को मुद्दा मानकर अपनी चुनावी रणनीति तय की

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

और ऐसा ही आम आदमी पार्टी ने भी किया। जोया हसन ने जनवरी 2013 में ही अपने शोधपत्र में कांग्रेस के भविष्य के बार में स्पष्ट कर दिया था ''यू.पी.ए.–दिशाहीन और अस्पष्ट नीति के मार्ग पर चल रही है तथा पार्टी नेहरूवाद व परिवारवाद का शिकार है जो इसके भविष्य के लिए अशुभ संकेत हैं''। इस सन्दर्भ में आगे चलकर चुनावी परिणामों ने उनकी इस बात को सत्य सिद्ध कर दिया और कांग्रेस के पक्ष में बहुत कम वोट पड़े।

वस्तुतः इस चुनाव में 83.41 करोड़ मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया और भारतीय जनता पार्टी व उसके सहयोगी दलों ने इस मतदान के सन्दर्भ में सर्वाधिक 336 सीटों पर विजय प्राप्तु हुई। इस चुनाव में मतदान व्यवहार को परम्परागत तत्व कम प्रभावित कर पाए और मंहगाई, भ्रष्टाचार, विकास और सुशासन के नाम पर जनता ने मतदान किया और क्षेत्रवाद की राजनीति ज्यादा प्रभाव नहीं दिखा सकी। यदि चुनावी परिणामों का सारगर्भित विश्लेषण किया जाए तो 12 राज्यों में कांग्रेस का खाता तक नहीं खुला और जातिवाद की राजनीति करने वाली मायावती की बहुजन समाजवादी पार्टी को एक भी सीट प्राप्त नहीं हुई। इस चुनाव में जनता ने अब स्पष्ट कर दिया कि वह केवल वोट बैंक की राजनीति के सहारे न तो देश को चलने देना चाहती है और न ही जाति धर्म की राजनीति पर आधारित रहकर मदान करना चाहती हैं। वस्तुस्थिति यह रही कि भारतीय जनता पार्टी को हर जाति व धर्म के लोगों का साथ मिला।

16वीं लोकसभा में युवा व महिलाएं– इस चुनाव में मोदी की प्रचंड सुनामी के कारण कई राज्यों से युवा व महिलाएं चुनकर आई। पहली बार 125 युवा सांसद संसद में पहुंचे जिसमें से 55 अकेले भारतीय जनता पार्टी से हैं। इसी तरह 54 महिलाओं ने संसद में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और इसमें से 25 संसद भारतीय जनता पार्टी से हैं। ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि 16वीं लोकसभा में 23 प्रतिशत से अधिक युवा सांसद तथा लगभग 10 प्रतिशत महिलाएं हैं। इससे पता चलता है कि यह चुनाव अपने आप में एक

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

अनोखा चुनाव था जिसमें प्रथम बार संसद में इतनी अधिक संख्या में युवा सांसद व महिलाएं पहुँची और सारी सांसद युवामय हो गई तथा साथ में महिलाओं का भी राजनीति सशक्तिकरण हुआ जो नारीवादी आन्दोलनों के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त करता है।

क्षेत्रीय दलों की स्थिति – कई राज्यों के लिए यह चुनाव क्षेत्रीय दलों के लिए ज्यादा शुभ नहीं माना जा सकता क्योंकि उनकी बैसाखियां कमजोर हो गई फिर भी आन्ध्रप्रदेश तथा तमिलनाडू में क्षेत्रीय दलों की स्थिति मजबूत रही। अब भारतीय जनता पार्टी को अकेले ही बहुमत प्राप्त हो गया और सौदेबाजी की वोट की राजनीति के दिन लद गये। इन चुनावों में क्षेत्रीय दल निर्णायक स्थिति में नहीं रहे। 1989 के बाद गठबन्धन की राजनीति के युग में जो घृणित खेल इनके द्वारा खेला गया वह सर्वविदित है। यू.पी.ए. सरकार के शासनकाल में तो भ्रष्टाचार और घोटालों के खेल में जो क्षेत्रीय दलों का संलिप्त होना इस बात की ओर संकेत करता है कि स्थिर व स्थायी सरकार के लिए द्विदलीय व्यवस्था ही भारत के लिए उपयुक्त व्यवस्था है अन्यथा क्षेत्रवाद की राजनीति से त्रस्त लोकतन्त्र के भविष्य पर भी प्रश्नचिन्ह लग जायेगा।

चुनावी परिणामों ने स्पष्ट कर दिया है कि समाजवादी पार्टी को उत्तरप्रदेश में 5 सीटें, जनता दल (यू) को बिहार में 2, राष्ट्रीय दल को वहीं पर 4 सीटें, पंजाब में आम आदमी पार्टी को 4 सीटें, झारखण्ड में मुक्ति मोर्चे को 2 तथा पंजाब में अकाली दल को 4 सीटें ही मिल पाई। क्षेत्रीय दल केवल कुछ ही राज्यों तक अपना प्रभाव कायम रख सके। इसमें महाराष्ट्र में शिवसेना 18, पश्चिम बंगाल में तृणमूल को 34, तमिलनाडू में अन्नाद्रमुक को 37, आंध्रप्रदेश मं टी.आर.एस. को 11 तथा तेलगुदेशम को 16 सीटें ही प्राप्त हुई। इस प्रकार क्षेत्रीय दल एक दर्जन से भी कम राज्यों तक सिमटकर रह गए जो उनके भविष्य पर सवाल खड़े करता है।

भावी रणनीति– 16वीं लोकसभा में चुनावी परिणामों ने स्पष्ट जनादेश देकर संसदीय लोकतन्त्र को एक सुरक्षा कवच दिया है। इस आधार पर चुनावी समीक्षाओं के दृष्टिगत भारतीय राजनीति को सही दिशा मिलना असम्भव नहीं है। इसलिए कुछ बुद्धिजीवियों व राजनीतिज्ञों का मानना है कि अब भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में कुछ अच्छा होने वाला है। वस्तुतः इस चुनाव में स्पष्ट जनादेश देकर प्रधानमन्त्री की गिरती गरिमा और साख की रक्षा की है। 15वीं लोकसभा के बाद बनने वाली यू.पी.ए. –2 सरकार में प्रधानमन्त्री की इतनी कमजोर स्थिति कभी नहीं देखी गई, अनेक घोटाले हुए प्रधानमन्त्री कार्यालय से फाईलें तक गुम कर दी गई परन्तु हमारे शासनाध्यक्ष मौन रहे। इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या होगा? परन्तु आज बदलते राजनीतिक परिवेश में यह लगने लगा है कि प्रधानमन्त्री नरेन्द्र सिंह मोदी के कुशल नेतृत्व में बनने वाली सरकार लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरे और जो वायदे उन्होंने देश की जनता से किए हैं उन्हें पूरा करें। 12 अगस्त 2014 को मोदी जी कश्मीर गए थे और वहां की वस्तुस्थिति को जाना। एक प्रधानमन्त्री होने के नाते उन्होंने वहां की जनता को विकास, सुशासन और युवाओं को रोजगार का भरोसा दिलाया। उन्होंने यह बात स्पष्ट कर दी कि वे ''न तो खाएगें और न ही खाने देगें''। इसके अलावा भारतीय जनता पार्टी सकरार को विदेश में जमा काला धन वापिस लाने का वायदा भी पूरा करना होगा और भ्रष्टाचारियों को जेल भेजना होगा। इसके लिए सुशासन और विकास के मुद्दे को कार्यरूप देना बहुत जरूरी है ताकि सरकार घोषणापत्र को अमली जामा पहना सके। इससे न केवल सरकार की लोकप्रियता बढेगी बल्कि लोकप्रिय जन संस्कृति का भी विकास होगा।

सारांश– इस तरह 16वीं लोकसभा के चुनावी जनादेश ने सरकार को नया आधार दिया है और इससे निर्मित सरकार पूर्ण बहुमत की सरकार है फिर भी इसके सामने कई चुनौतियां हैं। इसमें सबसे बड़ी चुनौती विरोधी दलों के आन्दोलनों की राजनीति की है जो बार–बार इसके मार्ग में बाधाएं डालने का प्रयास करेंगी। चूंकि घरेलू मोर्चे पर भी

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

सरकार को कई समस्याओं का सामना करना पड सकता है तथा महिला सशक्तिकरण के मुद्दे पर भी आरक्षण विधेयक को पास कराना भी एक बड़ी चुनौती है। राज्यसभा में पूर्ण बहुमत न होने की स्थिति में अधिकांश महत्वपूर्ण विधेयक अटक सकते हैं। अतः विपक्षी दलों के साथ समझौतावादी नीति पर चलकर ही सरकार की राह आसान हो सकती है और संसदीय लोकतंत्र की मर्यादाओं की सुरक्षा की जा सकती है।

सन्दर्भ सूची–

1. जोया हसन, ''दॉ कांग्रेस एण्ड ईटस फ्यूचर'', सेमिनार, नं. 641, जनवरी 2013.
2. दैनिक भास्कर, रोहतक, 17 मई 2014.
3. हिन्दुस्तान टाईम्स, दिल्ली, 17 मई 2014.
4. दॉ ट्रिब्यून, दिल्ली, 17 मई 2014.
5. बी.एल. फाडिया एवं पुखराज जैन, भारतीय शासन एवं राजनीति, साहित्य भवन, आगरा, 2014.
6. रजनी कोठारी, भारतीय शासन एवं राजनीति, ओरियंट ब्लैक स्वॉन, दिल्ली, 2014.